''आइना–ए–सीतामढ़ी'' पुस्तक के विमोचन–समारोह में
महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(स्थान–राजभवन, दिनांक 15.09.2016, समय– 4:30 बजे अप॰)

''आइना–ए–सीतामढ़ी'' पुस्तक के विमोचन–समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित सांसद श्री रामकुमार शर्मा जी, पूर्वमंत्रीगण सर्वश्री, शाहिद अली खान जी, सुनील कुमार पिन्टू जी, अनिल सिंह जी, देवेश चन्द्र ठाकुर जी, डॉ॰ ए॰ए॰ हई जी, लोकार्पित पुस्तक के लेखक डॉ॰ मो॰ शफीउज्जमाँ जी एवं कार्यक्रम में उपस्थित बुद्धिजीवीगण!

आज मुझे ''आइना–ए–सीतामढ़ी'' पुस्तक को लोकार्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक के लेखक डॉ॰ मो॰ शफीउज्जमाँ हैं। इस पुस्तक–लेखन के लिए, मैं उन्हें बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। विद्वान लेखक ने इस पुस्तक में सीतामढ़ी के इतिहास को प्रस्तुत करने के साथ–साथ, वहाँ के स्वतंत्रता–सेनानी एवं पूर्व विधायक स्वर्गीय बदीउज्जमाँ खान, जिन्हें लोग आदर से 'बच्चा बाबू' कहा करते थे, के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी प्रकाश डाला है। स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान बच्चा बाबू देश की आजादी के लिए लड़े और 1946 ई॰ में पहली बार वे संविद विधान–सभा के सदस्य भी बने। श्री शाहिद अली खान अपने काबिल वालिद बच्चा बाबू के सुयोग्य पुत्र हैं, जो अपने वालिद की विरासत को अच्छी तरह आगे बढ़ा रहे हैं।

डॉ॰ शफीउज्जमाँ द्वारा लिखित इस पुस्तक में कुल चार अध्याय हैं। पहले अध्याय में, सीतामढ़ी जिला की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है। दूसरे अध्याय में, शाहिद अली खान के परिवार और उनके राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान की विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। तीसरे अध्याय में, लेखक ने सीतामढ़ी के धार्मिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है। इसमें जनकपुर के राजा जनक, माता जानकी और मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की चर्चा की गई है। सीता माता के नाम से 'सीतामढ़ी' के नामकरण के संबंध में प्रचलित विभिन्न मान्यताओं को इस पुस्तक में विस्तार से वर्णित किया गया है। साथ ही, सीता जी से संबंधित सीतामढ़ी के मंदिरों एवं विभिन्न स्थलों का भी उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में सीतामढ़ी को हिन्दू–धर्मावलम्बियों के एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पवित्र केन्द्र के रूप में चित्रित किया गया है। लेखक ने इस अध्याय में भारत के विभिन्न धर्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए यहाँ की पंथ–निरपेक्षता और धार्मिक सदाशयता का विशेष रूप से वर्णन किया है। चौथे अध्याय में, सीतामढ़ी जिला के इस्लामिक शिक्षाविद्ों का उल्लेख है। सीतामढ़ी जिला की उर्वर भूमि में सर्वधर्म समभाव की विशेषता प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। इस भूमि पर कई महत्त्वपूर्ण इस्लामिक शिक्षाविद् एवं मुस्लिम धर्म गुरू हुए हैं, जिन्होंने अपने लेखन और विचारों से भारत की कौमी एकजेहती और मजहबी अमन के पैगाम को मजबूती प्रदान की है। इस क्रम में 20वीं सदी के

विख्यात इस्लामिक शिक्षाविद् मौलाना अब्दुल हन्नान क़ासमी का नाम उल्लेखनीय है। डॉ॰ शफीउज्जमाँ की यह पुस्तक सीतामढ़ी जिले के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक–हर तरह की विरासतों और समृद्धियों का वास्तविक दर्पण है। इस लिहाज से 'आइना–ए–सीतामढ़ी'– इसका नामकरण भी पूरी तरह सार्थक है। यह पुस्तक उर्दू भाषा में है। दरअसल, हिन्दी और उर्दू में मूल फर्क तो सिर्फ लिपि का ही होता है। हिन्दी के अधिकतर शब्द उर्दू में और उर्दू के हिन्दी में बराबर प्रयोग में लाये जाते हैं। इसीलिए तो किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि–

''हिन्दी भी हमारी है, उर्दू भी हमारी है
ये भी हमें प्यारी है, वो भी हमें प्यारी है।
हिन्दी और उर्दू में बस फर्क है इतना
एक देश की रानी है, एक राजदुलारी है।''

–उर्दू भाषा में सीतामढ़ी जिले की समेकित कहानी प्रस्तुत कर डॉ॰ शफीउज्जमाँ जी ने एक सराहनीय काम किया है, जिसके लिए ये हम सब के मुबारकबाद के अधिकारी हैं। आप सब महानुभावों को भी बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।